श्रीशान्तिसागर दिगंबर जैन ग्रन्थमाला सागवाडाका-प्रथम पुष्प।

॥ ॐ ॥

स्तवन पच्चीसी।

संग्रहकर्ता—



श्री १०८ मुनि श्री शान्तिसागरजी महाराज-छाणी।

प्रकाशक—

सेठ लल्लूभाई किस्तूरचंदजी डेवाड़िया-सागवाड़ा।

संशोधक—

मोतीलाल सुपरि. सा. त्रि. दि. जैन बोर्डिंग-सागवाड़ा।

आवृत्ति ०००	फाल्गुन कृष्ण ५. वीर सम्वत २४५६.	मूल्य- तीन आना।

श्रीवीतरागाय नमः ।

स्तवन पच्चीसी ।

१-शान्तिनाथ स्तुति ।

श्री शान्ति तुम्हारी, छे बलिहारी, जगविषे जिनराज ॥टेक॥
पुरो आश हमारी, दई सुखकारी, छे बलिहारी ॥जग०॥१॥
कुसुम वांछित आसन सुन्दर, धूप धूपादिनी धूम ।
उडी रहा अलबेला स्वामी, नाचुं छमाछम ॥
भाव अन्तर धारी, ज्ञान सुधारी, छे बलिहारी ॥जग०॥२॥
रोग शोक वियोग विदारी, दोजो दर्शन दान ।
बाजत ताल मृदंग साथे, नित्य लगावुं तान (रे)
प्रभु भक्ति वधारी, जगजयकारी, छे बलिहारी ॥जग०॥३॥
छत्र चमर अने भामंडल, झलके जाक जमाल ।
शान्ति संघमें शान्ति फैलावी, करजो मंगल माल (रे)
मांगु मन विचारी, विनय धारी, छे बलिहारी ॥जग०॥४॥

२-सीमंधरस्वामी स्तवन ।

सीमंधरस्वामी, दरशन दो महाराज
मारे अवर नहीं कोई काज, मारे रत्नत्रयनु जुइये राजरे ॥सीमं०॥
विदेह क्षेत्र मांहि जाणीयुंरे, कोई भविजन केरोरे वास ।
सीता नदी उत्तर तटेरे, कोई शोभा जगत विख्यातरे ॥सीमं०॥

समोशरन तहं शोभतुंरे, कोई बारे जोजन विस्तार।
सीमंधर तहं केवलीरे, कोई बेहरमान गुणमालरे ॥सीमं०॥
बारा सभा तहां शोभतीरे, कांइ चतुरविधि संघ सोहाय।
जिनवानी तहं उचरेरे, कांइ जोजन मान प्रमानरे ॥सीमं०॥
कागळ लख्यो तहां पंहोंचे नहींरे, कांइ संदेशो नहीं लगार।
भाव सन्देसो मोकलुंरे, कांइ मनडुं तुम्हारी पास ॥सीमं०॥
घाति कर्म क्षय कारणे रे, कांइ अरज करूं महाराज।
रत्न रीद्धि मुझ खप नथीरे, कांइ देवलोक नथी मुझ काजरे ॥सीमं०
संवत १८रा सो पन्दरा, कांइ अरज करूं हुं महाराज।
पोष अंधारी एकादशीरे, कांइ वांछित पुरीनी आशरे ॥सीमं०॥
जह नगर तंह शोभतुंरे, तहं ते देवनुं नामरे।
कर जोड़ी सेवक कहेरे, कांइ मांगु अविचल राजरे ॥सीमं०॥

३—श्री मेरुशिखरगिरी स्तवन।

सरस्वती माताने हुं पाय लागुं, निरग्रंथ गुरु पासे बुद्धि न मांगु।
मेरु शिखर गिरी जिनरे चैतालां।
ते हुं वन्दूं त्रणज काल ॥ मेरु शिखर० ॥
प्रथम मेरु सुदर्शन जाणुं,
विजय बीजो ने तीजो अविचल वखाणुं ॥मेरु०॥
मंदिर मेरु चोथोरे जाणुं।
विद्युत हूं पांचमो वखाणुं ॥ मेरु शिखर० ॥
मेरु मेरु फरते सोल सोल चैताले।
एसीये प्रसादे हुं वन्दूं आनंदे ॥मेरु शिखर० ॥

भादरवा सुदी अजवालीरे पांचम ।
पांच दिवस पूजा भणोरे भविक जन ॥ मेरु शिखर० ॥

ताल मृदंग वीणा वार्जित्र वागे ।
थथा थई थई अविचल नाचे ॥ मेरु शिखर० ॥

श्री कुन्दकुन्द गुरु एणीपेरे बोले ।
देव नहिं कोई जिनवर तोले ॥ मेरु शिखर० ॥

भाव भक्ति करी जे कोई गावे ।
स्वर्ग मुक्ति तणां निश्चय फल पावे ॥ मेरु शिखर० ॥

४–प्रभु स्तुति ।

प्रभु आव्यो उमंगे, तुम्हारा दरशन, चरणनी सेवा काज ।
हवे शरन तुम्हारी, लीधि छे भारी, तारजो दीनदयाल ॥

दीन बालाओ अरज करे छे, भवदधि पार उतार ।
चहुंगति भ्रमतां पार न आव्यो, पाम्या न शांति लगाररे ॥
प्रभु आव्या० ॥

आत्मार्थी अमे सर्वे सेवको, मांगिये बुद्धि अपार ।
वळी धर्ममां कुशल बनीने, पामीये भवनो पाररे ॥ प्रभु० ॥

तमारा चर्णनी सेवा करतां, पुन्ये पाप टेलाय ।
सुख संपति सहजे मिलशे, तेमां फेर ना थायरे ॥ प्रभु० ॥

माटे भविकजन सु उद्योगे, लागवुं निश्चे मारे ।
दया धर्मने अंगे धरीने, परनो करो उपकाररे ॥ प्रभु० ॥

५--सीमंधर स्वामीनुं स्तवन ।

धन्य धन्य क्षेत्र महा विदेहजी, धन्य कुंडलपुरी गाम ।
धन्य छे त्यांना मानवीजी, नित्य उठी करे प्रणामरे ॥
सीमंधर स्वामी क्यारे हूं, महा विदेह आवीश ।
जेवन्ता जिनवर क्यारे हुं तमने वंदीश ॥
चांदलीयाजी सन्देशो कहेशो, सीमंधरस्वामीने ।
भरतक्षेत्रना मानवीजी, नित्य उठी करेरे प्रणामरे ॥
॥ सीमंधर ॥ २ ॥
समोवशरन देवे रच्युंजी, चोसठ इन्द्र नरेशरे ।
सोनातणां सिंहासन बेठा, चमर छत्र धरेशरे ॥सी०॥३॥
इन्द्राणी काढे गुमर्डारे, ज्यां मोतीना चोक पुरेश ।
लरी लरी लेसे लोमनजी, श्री जिनवर देवे उपदेशरे ॥
॥ सीमंधर० ॥
रायने व्हालो घोड़लोजी, वेपारीने व्हालूं छे धन ।
अमने व्हाला सीमंधर स्वामी, जेम सीताने व्हाला छे रामरे ॥
॥ सीमंधर० ॥
नहि मागु हूं राज रीद्धजी, नहि मांगु ग्रन्थ भंडार ।
हूं मांगु प्रभुजी एटलुंजी, तुम पासे अवताररे ॥सीमं०॥
देवे नहि दीधी पांखडीजी, हूं केम करी आवुं हजूर ।
मुजरो हमारो मानजोजी, उगमते प्रभाते सूररे ॥सीमं०॥
एवे समे में सांभळ्युं जी, हवे करवारेय पचखाण ।
बे कर जोडी, विनवेजी, विनतडी उर धाररे ॥सीमं०॥

६--पार्श्व प्रभुनुं स्तवन ।

गुण तो पार्श्व प्रभुना गाईये, शान्ति पमाड़े तेने तो संत कहिये।
दास तेना दास थईने रहिये, शान्ति पमाडे तेने संत कहिये ॥
गोली ज्यारे खाधी, ने रोग रह्यो उभो ।
तेनी दवा शीरीते खाईये, शान्ति पमाड़े तेने ते संत कहिये ॥
वाटे लीधुं वळावुं, ने चोर ज्यारे लुंटे ।
तेना संगाते शीरीते जईये, शांति पमाड़े तेने ते संत कहिये ॥
कल्पवृक्ष सेव्युं, दारिद्र रह्युं उभुं ।
तेनी छायामें शीरीते रहिये, शांति पमाड़े तेने ते संत कहिये ॥
राजनी नोकरीमें, भूख ना भागी ।
तेनी नोकरी शीरीते राइये, शांति पमाड़े तेने ते संत कहिये ॥
गुरु ज्यारे कर ने, भूल नां काढ़ी ।
पंख्यानो मार शीरीते खाइये, शांति पमाड़े तेने ते संत कहिये ॥
नाम यानुं नाम मारा गुरुजी न बतावे ।
एवा गुरुना गुण शीरीते गाइये, शांति पमाड़े तेने ते संत कहिये ॥

७--आत्मा विषे स्तवन ।

घन गाजे विजली भला, वरसा मेघ आतम ।
नदी नालां जल भरयां ने, थईछे लीला लहेर आतम ॥
ओ मनुवा, भूमिरे तुमारी संभालजोरे भाई ॥ टेक ॥१
करमनी कोदालीयो, कुबुद्धि काढी झांखरा ।
ओ मनुवा भूमिरे तुम्हारी संभाळजोरे भाई ॥

भूमिरे तुम्हारी संभालजोरे, परुणा दिन चार आतम।
ओ मनुवा भूमिरे तुम्हारी संभालजोरे भाई॥
वानीना वारां जोतरां, नाभी दामन रास आतम।
ध्यानरुपी धुंसरुं ने, श्रद्धावी टेको लाव॥
ओ मनुवा अंतरनी आंटी छोडावजोरे॥
अरहंत सिद्ध बीज वाव्युं, तूं व्हेली करजो वाड आतम।
करमना कलोलीया, नीति नरभव रास आतम॥
ओ मनुवा भूमिरे तुमारी सोधावजोरे॥
मारो गाले मननीते, तन टोईयो मेले आतम।
ज्ञान रूपी गोफण सबद गोला छोड़े आतम॥
ओ मनुवा कुबुद्धिना काग उडारजोरे भाई।
सिद्धचक्रनी खेती पाकी, भागी भवनी भीड़ आतम॥
चार गतिनुं चुकवीने, जुनुं खातुं वाल आतम।
ओ मनुवा थई छे आनन्द लीला लहेरजोरे भाई॥

८--भक्ति विषे स्तवन।

भक्ति शुरवीरथी थाय, भक्ति शुरवीरथी थाय॥ टेक॥
निंदाना बाण गुरुजी, चाकुट चलावे।
कायरनुं हैयुं तेथी कटका थई जाय॥ भक्ति०॥
मद भरयो हाथी गुरुजी, चौटामें चाल्यो।
लोक भसी भसी सुपग जाले॥ भक्ति०॥

नट सुर खेल रचाव्यो, चोगानमें।
दोर विना तो नजरे न भाले ॥ भक्ति० ॥
पतङ्ग दीपकनी साथे स्नेह बंधाणो।
तन मन अरपी इने तजावी दईये ॥ भक्ति० ॥
मीन जलनी साथे प्रीत बंधाणी।
जल विना तो बीजुं नजरे न भालेरे ॥ भक्ति० ॥
नादना मोह्या गुरुजी मृग मरे छे।
शब्दना मोह्या गुरुजी संतगरे छे ॥ भक्ति० ॥
चातक शब्दना को तो बन्ध पुकारो।
नीति विना तो बीजुं नजरे न भाले ॥ भक्ति० ॥

९-मनोरथ माला।

श्री जिनवरस्वामीने मन धरी, श्री जिनवाणी निश्चय करी।
सार मनोरथ माला गाईसुं, ओ जिनजी ॥ १ ॥
अनादि कालनो जीव रडवड्यो, कुगुरु कुदेव कुधर्म फल्ले।
सत्य मारग विना जीव बापड़ो होओ जिनजी ॥ २ ॥
काल लब्धी पामी करी, श्री जिनवर धर्म हृदये धरी।
करणी फल दरशनमें निर्जरा ओजी० ॥ ३ ॥
सात व्यसन क्यारे टालशुं, अष्ट मूलगुण क्यारे पालसुं।
बेरे बिधी वैराग्य क्यारे चिंतवसुं, हो, ओ जिनजी ॥ ४ ॥

श्रावकनुं वृत आदरी, दान पूजा उत्सव करीं।
निरग्रन्थ पदवी क्यारे पामशुं, ओ जिनजी ॥ ५ ॥
तेरे प्रकार चारित्र धरी, घोर वृत तप आदरी।
त्रिकाल सामायिक जोग धरी, भय परिहरी ओ जिनजी ॥६॥
गिरी कोटर अटवी वने रही, रह्या २ एक मन स्थिर।
मन तणारे मेल क्यारे टालसुं ओ जिनजी ॥ ७ ॥
रागद्वेष सहु परिहरि, शत्रु मित्र समो गणी।
मोह वैरीथी क्यारे जीतशुं, ओ जिनजी ॥ ८ ॥
आत्मध्यान क्यारे दिपावशुं, बाइस परीषह क्यारें जीतशुं।
समतानुं सरोवर क्यारे झीलसुं, ओ जिनजी ॥ ९ ॥
उपशम, वेदक, क्षायक, अति निरमलुं समकीत।
एवो गुणस्थान क्यारे पामशुं, ओ जिनजी ॥ १० ॥
क्षपक श्रेणी अरोहिणी, करम तणां मेल धोइने।
निरमल भाव क्यारे भावसुं, ओ जिनजी ॥ ११ ॥
शुक्लध्यान सहज करी, घातिया कर्मनो क्षय करी।
केवल ज्ञान क्यारे पामशुं, ओ जिनजी ॥ १२ ॥
भव्य जीवोने बोध आधरी, शेष कर्मने दूरे करी।
मोक्ष नगरीरे क्यारे पामशुं, ओ जिनजी ॥ १३ ॥
एवा एवा मनोरथ जे भणे, ते निश्चे ही मुक्ति रमणी वरे।
ओ जिनजी० ॥ १४ ॥

१०—मोटाई विषे गायन ।

मोटाई मोटी मेलवी, मोटा गणाया विश्वमां ।
मोटुं न राख्युं मन कदी, मोटा थया तो शुं थयुं ॥१॥
निज घरनुं ठेकाणुं नहीं, देखाव दे गृहस्थाइनो ।
अक्कड थई फक्कड फरे, रोफ राख्ये शुं थयुं ॥ २ ॥
उपरनो आडंबर करी, वाणी वदे साकर धरी ।
भोळा फसावी कंइकने, उजला फरेथी शुं थयुं ॥ ३ ॥
भपका भर्या वस्त्रो सज्या, निज आबरु धूल मेलवी ।
माणी मजा मित्रो सहित, ए दम्भ राखे शुं थयुं ॥
लई लाडीने साथे फर्या, गाडी महे खूब ठाठथी ।
माता बिचारी बलबले, ए ठाठ राख्ये शुं थयुं ॥
कोलर लगावी कोटमें, आंखे धर्या चश्मा वली ।
फेसनतणी फसीयारमें, मजकूर बनेथी शुं थयुं ॥
नाणुं कमायुं नेहथी, पैसा घणाये मेलव्या ।
मागतुं आप्यो नहीं, जोर जमाव्ये शुं थयुं ॥
गंगा अगर जमना जले, नाह्या धरी मन हर्षथी ।
मन मेलने धोयो नहीं, स्नान कीधेथी शुं थयुं ॥
गांजो तमाखु भांग के, दारु पीने व्यसनी बन्या ।
एक धर्मरस चाख्यो नहीं, तो व्यसन कीधे शुं थयुं ॥
जीवित पितानी लागणी, किंचित नहीं मनमें धरी ।
मुवा पछीथी खरच करे, वाहवाह केवाथी शुं थयुं ॥

पंडित बनी निज पुत्रको, परपुत्रने भणावतो।
निज भूलने शोधी नहीं, पंडित बनीने शुं थयुं ॥
गरज सुधि साथे रहे, सरतां अलग थातां पछी।
निमकहरामी मनुष्य हुआ तो होय नहीं तो शुं थयुं ॥

११–दिवालीनुं स्तवन।

पहेरो पहेरोने नवो रंग साडीरे, आजे मारे दिवाली अजवालीरे।
गावो गीत वधावो गुरुने, मोतीडे भरी भरी थाली ॥आ०॥
चरचो अंग चतुर सिंहासन, श्रीचरणकमल परवाली।
धन धन मंगल तेरसको दिन, पूजा प्रभावना चालीरे ॥आ०॥
शुद्ध बुद्ध आयो अति रुवडली, काली ते केवल चउदस।
पाप हरणनो पोषो कीजे, मननो मेल सौ टालीरे ॥आ०॥
चौदशनी पाछडली राते, आठ करम दीधां टाली।
श्री महावीर पोहच्यां निरवाणे, अजर अमर सुख चालीरे ॥आ०
ए अमावास्या परव दिवाली, फरति जाक जमाली।
घर घर दीवडला सा जलके, रात दिसे अजवालीरे ॥आ०॥
पडवेके दिन ज्वार पटेरो, रीत रुढ़ी एम चाली।
श्री सद्गुरुना चरण सोहावी, रड पामी रडीयालीरे ॥आ०॥
बीजे हेत करे छे भाई, बेनडली अतिवाली।
ए पांच दिवस होय पनोता, आवो २ हरख सुचालीरे ॥आ०॥
हास्यविनोद करे मृगनयनी, वणे ते शेव सुहाली।
श्रीकुंद २ स्वामीनी वाणी मनोहर, मोटी २ अमिरसवाणीरे ॥आ०

१२--रात्रि-भोजन विषय स्तवन ।

रजनी भोजन सजनी क्यारे नव करोरे,
राते जमता जन्तु पड़े छे पात्रमें ।
तेथी लागे जमनाराने पाप जो ॥ टेक ॥

पापथी नव सचवाये, जीवनी दया,
जिनवाणीनो तेथी थाय उपाव जो ॥ रजनी० ॥

कीड़ी आवे मुखमें मति लोपाय जो ।
जूं आवेथी रोग जलन्दर थाय जो ॥ रजनी० ॥
वमन करावे माखी मुखमें पेसता ।
मकड़ी खाता कोढ़ शरीररे ॥ रजनी० ॥
कांटो पीडा करे गलेमें अतिगणो ।
बीछु तालु बींधें पीडा काल जो ॥ रजनी० ॥
स्वरनो भंग करे छे वार मुख्ये पड्यो ।
पीडा तेथी थाय प्रसार जो ॥ रजनी० ॥
हंस अने केशवनी कथा गवायजी ।
रात्रि-भोजन पर छे दृष्टांत ॥ रजनी० ॥
श्रद्धान करीने मनमें धरजो प्रीतथी ।
ए व्रतथी पामो पुण्य महंत ॥ रजनी० ॥

१३--शीयल स्तवन ।

सुनो समझु सकल नरनारियों, मोटो शीयणतणो महिमाये।
शीयल पालो स्नेहथी ॥

सोना रुपानी शोभा न समझीये, शोभा सरस शीयल शणगार।
शीयल पालो स्नेहथी ॥

जेवा नकटाने भूषण नाखीये, एवो शीयल विना नर नारी ।
शीयल पालो स्नेहथी ॥

सुन्दर साडी ते पहरो शीयलतनी, कोटे नवसर नीतिनो हार।
शीयल पालो स्नेहथी ॥

गोरी कुन्डना पासे जतां थकी, कालो डाग पड़े तत्काल ।
शीयल पालो स्नेहथी ॥

एवी बीजी नठारानी सोबतो, अणचिन्त्यु चढ़े छे आल ।
शीयल पालो स्नेहथी ॥

तजीये तजीये सोहबत तेहतणी, नव करीये एवा काम ।
शीयल पालो स्नेहथी ॥

एथी कुलने कलंक लागे घणो, एवा नहीं करिये आचार ।
शीयल पालो स्नेहथी ॥

फाडी आंखे फरे जे फातड़ो, तेनु माटीमें डाटीये मुख ।
शीयल पालो स्नेहथी ॥

बेनी वात एकांत नव कीजिये, भले होय भ्रात के तात ।
शीयल पालो स्नेहथी ॥

बेनी चटक मटक न चालीये, शीयलवंती शुभ लक्षण नार।
शीयल पालो स्नेहथी ॥
बेनी माथे आगु उढी चालीये, नव करीये आँखडली विकार।
शीयल पालो स्नेहथी ॥
बेनी जग तारन जिनराजजी, करो भक्ति स्तुति तीन काल।
शीयल पालो स्नेहथी ॥
भणी गणीने शीयल नव साचवे, तेनी भणतरमां उठी छे आग।
शीयल पालो स्नेहथी ॥
जे कोई शीयल सारी रीते साचवे, तेना सफल मनोरथ थाय।
शीयल पालो स्नेहथी ॥
हवे चउगति पुरन साथीयो, उपर मुक्युं छे पंचरत्न।
शीयल पालो स्नेहथी ॥
बेनी कन्याशालामें भणी गणी, सौ मुकीदो आल पंपाल।
शीयल पालो स्नेहथी ॥

१४--जीव विषे भजन।

के जीव रहु ते शुं करयुं, आव्यो श्रावक अवतार।
धर्म ध्यान कर्यां नहीं, फोगट फेरो संसार ॥के जीव०॥
दया धर्म तु भूलीयो, भूल्यो नीति व्यवहार।
पुन्यमें पाई न वावरी, कीरतीमें खरच्या हजार ॥के जीव०
अणगल पाणी नां पारख्यां, ने गारानो नाहीं विचार।
जतन जरा ते नवी करी, पापनो तेमां नहीं पार ॥के०॥

रात दिवस जाण्यो नहीं, गयो देश परदेश।
भोजन वेळा ते वही गई, गण्यो दोष न लेश ॥के जीव०॥
भक्षाभक्ष गण्या नहीं, नहीं राख्यो आचारे राग।
शुद्र समान क्रिया करी, हार्यो धर्म बड़ भाग ॥के जीव०॥
छकम छक्का ते साखीया, देखे छे दरपनमें मुख।
केसर साथे तिलक करे, माने तेमां बहु सुख ॥के जीव०॥
मदना भरेला मानवी, मोहे बनीयो तु अंध।
सारासार विचारनां, मोह्यो छे झूठो फंद ॥के जीव०॥
तु कहतां टुकों थाय छे, कपट कला नहीं पार।
डहापन तेमां देखाडवुं, पुठ न जोयुं न लगार ॥के जीव०॥
लोभ पापनो बाप छे, लोभे लक्ष न जाय।
लोभे सौ गुन दूर रहे, लोभे अनीति प्रकाश ॥के जीव०॥
विषय फसेलो जीवड़ो, विषये माने छे सुख।
दुष्टता अंदर वापरी, केवल शोक स्वरूप ॥के जीव०॥
विषय कषाय जीतियो, जीत्यो सघलो संसार।
एवा जिनवर मानीये, नमीये वार हजार ॥के जीव०॥
पाप पोटली सिरपर धरी, हलको हलको केम थाय।
आपडुं परनुं न सही सके, मनमें बहु मलकाय ॥के जीव०॥
वेर जेर बांध्या घणा, सुधारानो नाहीं विचार।
पोथीना पाना फेरव्या, जस तेमां नाहीं लगार ॥के जीव०॥

आचोर वसति लक्ष्मी, लक्ष्मी विना पुण्य केम थाय ।
पुण्य विना केम पामीये, सघलो सघलो पुण्य महिमाय ॥के०
धोयलामां ते धूळ भरी, परण्या केडे प्रस्ताय ।
आशाना बांधेला प्राणीया, समझ्यो नहीं जराय ॥के जीव०
दवा दारुनी वापरी, गण्यां न तेमां दोष ।
जीभ्या लंपट थई जीवड़ो, राख्यो नाहिं संतोष ॥के जीव०
नदी फाटी नीर वही गयुं, मूरख तेवुं न थाय ।
पाणी पेली ते पाल बांधशो, डापण तेमां गणाय ॥के जीव०
चेतो चेतन चित्तमां, अधिक कहे शुं थाय ।
आवो अवसर आवे नहीं, जीति बाजी जाय ॥के जीव०॥
विचारीने वरतो सदा, अणघटतुं नहिं कराय ।
केवलज्ञान नी सीख छे, वरतो सत्य सदाय ॥के जीव०॥

१५--आत्माने उपदेश ।

चेत तो चेतावुं तनेरे, मूरख प्राणी ॥ टेक ॥

सजी घरबार मारुं, मिथ्या कहे छे मारुं मारुं ।
तेमां नथी कशुं तारुंरे, पामर प्राणी ॥ चेत तो चेतावुं० ॥
तारे हाथे वपराशे, तेटलुंज तारुं थाशे ।
बीजुं तो खाताने जाशेरे, मूरख प्राणी ॥चेत तो चेतावुं०॥
माखीये मध कीधुं, [illegible] न दान दीधुं ।
लुटाराये लुटी लीधुंरे, मूरख प्राणी ॥ चेत तो चेतावुं० ॥

खंखेरीने हाथ खाली, अचानक जावुं चाली ।
करे माथा कुटी खालीरे, मूरख प्राणी ॥चेत तो चेतावुं०॥
साहुकारीमां तुं सवायो, लाखोपति तुं केवायो ।
कहे पाछुं शुं कमायोरे, मूरख प्राणी ॥ चेत तो चेतावुं० ॥
आवे तारी साथ एवो, कमायो तुं माल केवो ।
अवेज तमाम तारोरे, मूरख प्राणी ॥ चेत तो चेतावुं० ॥
कर्मे तो रतन दीधुं, तो न तें किंमत कीधुं ।
मणी साटे भेंस लीधीरे, मूरख प्राणी ॥ चेत तो चेतावुं० ॥
खीसामांथी धन खोयुं, काजलथी कपाल धोयुं ।
जाणपणुं तारुं जोयुंरे, मूरख प्राणी ॥ चेत तो चेतावुं० ॥
अजी हाथमां छे बाजी, कर तुं प्रभुने राजी ।
तारी मुट्ठी कर ताजीरे, मूरख प्राणी ॥ चेत तो चेतावुं० ॥
हाथमांथी बाजी जाशे, पछीथी पस्तावो थाशे ।
कशुं न करी शकाशेरे, मूरख प्राणी ॥ चेत तो चेतावुं० ॥
मननो विचार तारो, मनमें रही जाशेरे ।
पछीथी पस्तावो थाशेरे, मूरख प्राणी ॥ चेत तो चेतावुं० ॥
निसरो तुं जे शरीरथी, पछी तुं मालिक नथी ।
गुरुये कीधुं कथीरे, मूरख प्राणी ॥ चेत तो चेतावुं० ॥

१६–श्रावकनी नित्य क्रिया।

सकल संघनी बैंनीयो तमे सांभलोरे।
श्रावक नित्य क्रियाने चितमां धारजोरे॥ सकल०॥
वहेली उठीने नौकार बोलजोरे।
पछी घरनो व्यवहार आरम्भजोरे॥ सकल०॥
नाहीं धोईने शरीर शुद्ध राखजोरे।
स्वच्छ वस्त्रोंथी अंग शोभावजोरे॥ सकल०॥
देव दर्शन करी थाओ पावनारे।
अष्ट द्रव्य लईने भावो भावनारे॥ सकल०॥
माता पिता वडील स्वामी सर्वनेरे।
जय जिनेन्द्र करीने मान आपजोरे॥ सकल०॥
धर्म शास्त्र वांचीने वंचावजोरे।
इन्द्रिय दमन करीने विषय दाबजोरे॥ सकल०॥
व्रत नियम पालीने तप धारजोरे।
शक्ति माफिक दान चार आपजोरे॥ सकल०॥
शुद्ध वस्तुओथी भोजन बनावजोरे।
जीव हिंसादिक पांच पाप टालजोरे॥ सकल०॥
घर काममां कुशलता वापरजोरे।
जैनधर्म श्राविका नाम धारजोरे॥ सकल०॥
चतुर नारी भूषण थई मालजोरे।
एवी विनती आनन्दे उर आनजोरे॥ सकल०॥

१७-बुरा होने बाबत ।

पुन्य मारगमां कोडी नव वापरेरे, आड़ामारगमां वापरे हजार

भुंडुं थावानुं ढोल तमे भालजोवे ॥ टेक ॥

उपज ओछीने खरच घणुं आदरेरे।
झूठ साथे जडेलो जेनो जीवड़ोरे।
कुड़ी साहेदी पुरयाना घणा कोडरे ॥ भुंडुं० ॥
दीनोनाथ रुठ्या त्यारे गाल्यां डाकलारे।
धणी धणीयाणी जोडाजोड ॥ भुंडुं० ॥
दोरा चिठ्ठियोंमें नित्य वरं दोकड़ारे।
वाधा आखडीयो सालती सदाय ॥ भुंडुं० ॥
आखा घरना माणस थया आलसुरे।
कोई उद्यमने वापरे ना जाये ॥ भुंडुं० ॥
खावा सर्वेने जोईये सारुं सोतरुंरे।
आवे भाणामें बीजुं बीजुं अन्न ॥ भुंडुं० ॥
छति माटीये उजड जेवुं आंगणुंरे।
छते पाणी छे ढेड़ जेवुं तन ॥ भुंडुं० ॥
वाटे घाटे आंगणे खेरं खेतरेरे।
पडयुं पाडोसीनुं चोरवानी साल ॥ भुंडुं० ॥
नित्य घरमें कंकास थाय कारमोरे।
लेशे तालियोने लोक जोवे ताल ॥ भुंडुं० ॥
देवुं करतां डरे न जरा दिलडुंरे।
लेता देतां भारे ढाढीयोने ढांढ ॥ भुंडुं० ॥

न्यात जातमें कांटा घणां वेरीयारे ।
बन्यो पक्को मूरख सरदार ॥ भुंडुं० ॥
ऊंधो मारग झाली भलांने भोळव्यारे ।
पछी पस्ताय छे वारंवार ॥ भुंडुं० ॥
राखी डंश ने वेर लेवुं घणुंरे ।
जाणे जेरीलो सर्पनो अवतार ॥ भुंडुं० ॥
दान अर्थे हाथ लागे धुजवारे ।
टंटा बाजीयोमें लडवानुं लाण ॥ भुंडुं० ॥
चोरी चाडी कुकर्मनी चिंता नहींरे ।
मेहनत मजूरीमं लावे टंटे हजार ॥ भुंडुं० ॥
सीख सारी नठोरने तो ना गमेरे ।
सारुं सर्वनुं चाहे ऋषिराय ॥ भुंडुं० ॥

१८--सुवर्ण भक्ति मन विषे ।

नर तन नगरीमां मन भाई रिसाईने बेठा ।
मोटेरा मानथी मनावो हो लाडना ॥
आसी अडाई रे तारा मनडारे मारा ॥
रामचरित्र कहो तो रमकडा अपावुं ।
वेहदनी बाजीयो मंडावो हो लाडना ॥
तपस्या नगरीनां कहोतो कंदोई तेडावुं ।
प्रेमना पकवान पडावो हो लाडना ॥
थिरता नगरीनां कहोतो थाळ मंगावुं ।
भावतां भोजन पीरसावो हो लाडना ॥

धीरज नगरीनां कहोतो धोतीयां मंगावुं ।
समझणनो जामो सावडावो हो लाडना ॥
मोह वेचीने कहोतो मोरीयां मंगावुं ।
सौधर्मनां सोगलां सोहावो हो लाडना ॥
कोमलना केरा कहोतो कुन्डल करावो ।
जुगतिनी चुनीयो जडावो हो लाडना ॥
ऊंची संगतिनी कहोतो सांकली करावो ।
पुन्यनी टोपीओ पहरावो हो लाडना ॥
मरजादा केरी कहोतो माला पहरावो ।
मोक्ष ने क्षमानी दोरे गंठावुं हो लाडना ॥
आसी भक्ति केरा बाजू बनावो ।
मोक्षने हीरडे बंधावुं हो लाडना ॥
पवित्रता केरा कहोतो पुंचियो मंगावो ।
बुद्धिना वेड वनावो हो लाडना ॥
कपट वेचीने कहोतो कन्दुरो करावो ।
चेतनना मोगरा चीतरावो हो लाडना ॥
त्याग कनक ना कहोतो तोड़ा करावो ।
व्रतनी घृघरी फन्दावो हो लाडना ॥
ज्ञान स्वरूपी कहोतो घोडीलो मंगावो ।
करुणाना चोकमां नचावो हो लाडना ॥
ध्यान स्वरूपी कहोतो छतरी धरावो ।
विवेकने मोतीये बंधावो हो लाडना ॥

सतसंग सोनानी कहोतो गाडीयो घडावो ।
मन गमना तमने वेसाडुं हो लाडना ॥
कजली वनथी कहोतो हाथीडो मंगावो ।
मुक्तिनो होदो अपावुं हो लाडना ॥
बावन बजारे कहोतो फुलेकुं फेरवावुं ।
अनहद्‌नां वाजां वगडावो हो लाडना ॥
सुरता नगरीना कहोतो सखीओ तेडावो ।
ज्ञानना गानां गवडावो हो लाडना ॥
अधर्म दारुनी कहोतो कोठीयो छोडावो ।
नीतिनी नायका नचावो हो लाडना ॥
मन स्वरूपी कहोतो मुजडी सीवडावो ।
भलपणना तारे भरावो हो लाडना ॥
विचार वाडीमां शीतल पाणी छंटावुं ।
योगना झाड़ रोपावो हो लाडना ॥
चोतेरे बेठकनो कहो तो बंगलो सणावुं ।
तीन गुप्तिनी वारीओ मेल्लावो हो लाडना ॥
च्यारे देशनी कहोतो चोरीयो चीतरावुं ।
निवृतनी नारीयो परणावो हो लाडना ॥
जेम २ मनावे तेम २ हट करे छे ।
सद्‌गुरुये शानमां समझाव्यो हो लाडना ॥

१९--श्रावकना दोष विषे ।

पामी श्रावकनो अवतार, कीधी भक्ति नहीं लगार ।
कीधी भक्ति नहीं लगार, कहोने केम उतरशो भवपार ।।टेक।।
भव तो सौ एले काढ्यो, परनी इच्छा राख ।
अमृत रस छोडी दईने, जेर हलाहल चाख ।। पामी० ।।
बेसवुं उठवुं वसमुं लागे, ऊंघ गुलावी आवे ।
भक्ति करवी भुंडी लागे, मरन समय मुझांय ।। पामी० ।।
आठ वागे ऊँघमाथी उठी, दांतण पाणी करतो ।
नव वागे नवरास मले तो, ऊघराणीमें फरतो ।। पामी० ।।
खरे बपोरे नहावुं सूझे, नहाईने मंदर जातो ।
चपटी चोखा धरी देवने, मनमें खुशी थातो ।। पामी० ।।
न चुके नोकार गणे तो, स्वाध्याय शुं केहवाय ।
सेवा सारु सेवक राखे, अेरे उदय केम थाय ।। पामी० ।।
अन्याय पोते आदरेने, न्यायनु न ले नाम ।
ओछुं आपी अदको लेवो, शुं श्रावकनुं काम ।। पामी० ।।
दम पर गोते, लोभे गयो लेवाई ।
किर्ती काजे हजार खर्चे, पुन्यमां न दे पाई ।। पामी० ।।
वेश्या नृत्य ने आतशबाजी, तेमां दोष अपार ।
लावो लेवा जैनी भाईयो, खेले लग्न मझार ।। पामी० ।।
पैसा देखी पुजे तेने, नारीमें नेहज राखे ।
पूरा पुन्यथी पुत्र मलेतो, भक्ति रस केम चाखे ।। पामी० ।।
आचार आपणों अलगो रह्यो तो, विचार गयो वटलाई ।
जैनधर्मने भूली भाईने, आछुं करशो कोई ।। पामी० ।।

जैन जाति केहने केवी, शुं जैनीनुं नाम ।
अधम गतिने प्राप्त थईने, लखो जैनीनु नाम ॥ पामी० ॥

बालविवाह ने वृद्ध विवाहथी, अनाथ वाला अकलाय ।
विधवा थया, विना पुरुष बहु मुंझाय ॥ पामी० ॥

अनाथ बालाओनो विक्रय करीने, धननो संग्रह करतो ।
मोज मजामें अहंकार धरीने, मगरुबी गुमान करतो ॥पामी०॥

रत्न समान मनुष्य देहमें, सुकृत पुन्य समान ।
सात व्यसन छोड़ी दईने, अष्टमूलगुण धराय ॥ पामी० ॥

अमर वासना रहे अविचल, साचो अमृत ज्ञान ।
तप व्रत संयम धरीने, जैनीनो धर्म उजवाल ॥ पामी० ॥

शुद्ध मनथी स्मरण करीने, भक्ति रस जो भरसे ।
गुरुराज राज कहे छे, निश्चयथी ते मुक्ति वरसे ॥पामी०॥

२०--बीड़ी विषे स्तवन ।

शाणां सज्जन सर्वे बीडी व्यसन त्यागजोरे ।
तन मन तेथी नबला वली, वपुनो नाश ॥
एवी दुरगुण देखी, तजो तमाखु प्रेमथीरे ॥ टेक ॥

दोहा ।

बीडी पीनारा तणी, आँखे अंते जाय ।
काल जड़े चाँदी पड़े, बुद्धि ओछी थाय ॥

रोगनुं मूल खांसी जे तेने टेको आपतीरे ।
पाचनशक्ति बगड़े स्वास बहु गंधाय ॥ एवी दुरगुण० ॥

चिलम भरीने ठालवे, कीडियो मरे हजार ।
दया तजी दोष आदरे, मूरखनो सरदार ॥
लाळ बहु चाटे परनी पोने प्रेमथीरे ।
घर जई जुओ तेनुं राख भरचुं देखाय ॥ एवी दुरगुण० ॥
चौमासाना दिवसमां, जीवहिंसा बहु थाय ।
काकड़में कीड़ा पडे, सुणतां वागे बाण ॥
तोपण अंध बनीने पीये तमाखु प्रेमथीरे ।
दिन २ उच वलेने जीवनुं करतां पान ॥ एवी दुरगुण० ॥
भोगी कापे भांगने, पीवानुं बहु पाप ।
शोकिन थईने सेवतां, पृगे पापी आस ॥
जाणी जोईने पीशो तो पापी थशोरे ।
जेरी सोमल समझी नव पीशो कोय ॥ एवी दुरगुण० ॥
बीडीवाळे बहु जन, हिन्दु मुसलमान ।
शुद्ध बनीने सेवतां, बनी बहु अज्ञान ॥
सुकी न्यात जातने तमे पूरण प्रेमथीरे ।
पामी जैन धर्मने श्रावकनो अवतार ॥ एवी दुरगुण० ॥
बढी वजीर बीडियो, खरी नरकनी खान ।
राक्षसी कळी कालनी, बडी लुटारी जाण ॥
बीडी अरे बुडाडे परभवमें तुज प्राणरे ।
आत्मज्ञान तजीने धरे धुंआडे ध्यान ॥ एवी दुरगुण० ॥
जे नर खाये खांतथीरे, सहजे समझे सार ।
हैया फूटा हींडता, थूंके ठारो ठार ॥

झेरी थूंक अड्याथी जीवो बहु मरी जायछेरे ।
अन्ने दाढ अने वली दांते थाय खोवार ।। एवा दुरगुण० ।।

तमाखुने घुंटतां, बने बहु तपखीर ।
सूंघे छींको आवती, बगडे उत्तम चीर ।।

खूब वखाणी मुख मरोडी खूब होंशथीरे ।
छीकणी हैय्या देखणी थाशे जमने द्वार ।। एवा दुरगुण० ।।

खातां खोटी लागती, पीते पाप अपार ।
सुंग्याथी सोढे अति, सार न दीसे यार ।।

खरेखरो मूढ मनुष्य राक्षसीने सेवतोरे ।
तजी देवमंदिर अने, धर्मनुं अभिमान ।। एवी दुरगुण० ।।

तप व्रत तेथी नहीं बने, करे भक्तिनो भंग ।
नर नारी सौ छोडीने, सदा करो सतसंग ।।

गुरुराज कहे छे व्यसनोथी दूर रहोरे ।
सत्य सुखदायक सेवो भावो श्री अरहंत ।। एवी दुरगुण० ।।

२१--वैराग्य विषे स्तवन ।

आतन तरत पडी जशे, काले आवशे काल ।
बालापणुं वीती गयुं, जोबन मायानी जाल ।। आतन० ।।
सुन्दर सुन्दरी संगमें, भ्रमता दिवसने रात ।
भूलीगयो भगवंतने, तारा करमनी वात ।। आतन० ।।
मारुं मारुं मानी मूरखा, तारुं नथी तलभार ।
वारंवार विचारीने, वेहलो करजे विचार ।। आतन० ।।

रात दिवस सुता बेसतां, घडपण आव्युं गमार ।
पुत्र कलत्रने किंकरो, परवश छे परीवार ॥ आतन० ॥
चित्त चिंता महे परिहरी, पूंजू परमदयाल ।
जूज वखत छे बाकी हवे, खोली आंख निहाल ॥आतन०॥

२२–दशलक्षण धर्मनुं स्तवन ।

जीरे सरस्वती माताने वीनवुं, कांई सद्गुरु लागुं छु पायरे ।
सुज्ञानी धर्म पालोरे तमे प्रीतथीरे ॥ टेक ॥
दशलक्षणी पर्व अति निरमेळारे ।
तेन पालो भविजन नितरे ॥ सुज्ञानी० ॥
दशधर्मने चित्तमां धारजोरे ।
करजो कर्म रज चकचूररे ॥ सुज्ञानी० ॥
क्रोध वेर विरोधने दूरी करीने ।
क्षमा धर्मनो करवो विचाररे ॥ सुज्ञानी० ॥
मान अष्ट प्रकारे त्यागवुंरे ।
धरीये मार्दव गुण सुखदायरे ॥ सुज्ञानी० ॥
मायाचारनी जालने तोडवीरे ।
तेथी सत्य वचन सिद्ध थाय ॥ सुज्ञानी० ॥
आशा पाशना बंधन तोडवारे ।
करो संतोष जे कोई मनरे ॥ सुज्ञानी० ॥
हितमित मधुर वाणी बोलीयेरे ।
करो अजीव उत्तम भावरे ॥ सुज्ञानी० ॥

बारे अविरतने तजो मनथीरे ।
धारो उत्तम संयम भावरे ॥ सुज्ञानी० ॥
इन्द्रि विषयनी इच्छा रोकीयेरे ।
शक्ति माफिक करो तपरे ॥ सुज्ञानी० ॥
पर द्रव्यनो लोभ घटाडीने ।
करवा चार प्रकारना दानरे ॥ सुज्ञानी० ॥
पर वस्तुओथी निजरूप भिन्नछेरे ।
एम करवो अनुभव नित्यरे ॥ सुज्ञानी० ॥
कुशील भावोने मनमें न लावीएरे ।
धरो उत्तम ब्रह्मचर्य व्रतरे ॥ सुज्ञानी० ॥
दशधर्मने शुद्ध पालजोरे ।
जेथी उतरशो भवपाररे ॥ सुज्ञानी० ॥
एम सतगुरुनी शिखामण सांभलीरे ।
अनुभव सिंधु अपाररे ॥ सुज्ञानी० ॥

२३--ऊंघ विषे स्तवन ।

तारा माथे कोपी रह्यो कालरे, ऊँघ तने केम आवे ॥१॥
पाणी पेली बांधी ले पालरे, ऊंघ तने केम आवे ।
नथी एक घडीनो निरधाररे, ऊंघ तने केम आवे ॥
आतो सपना जेवो संसाररे, ऊंघ तने केम आवे ।
अल्या एले खोयो अवताररे, ऊंघ तने केम आवे ॥

तारा माथे छे जमनो भाररे, ऊंघ तने केम आवे ।
तारा मननुं धारूं थाए छे धूळरे, ऊंघ तने केम आवे ॥
फरी आव्यो छे में अवताररे, ऊंघ तने केम आवे ।
जोतां जोतां आयु सउ खुटी जायरे, ऊंघ तने केम आवे ॥
कांठे आवेली नाव डूबी जायरे, ऊंघ तने केम आवे ।
तारा माटे बंधु गुरुराजरे, ऊंघ तने केम आवे ॥

२४--बाळ गीत ।

हुं तो भरूं गजमोतीडे, मारा हर्ष तणो नहीं पार ।
आजे मंगल दिवस सोहेलडो ॥ टेक ॥
भरी कुंकुम केशरना वाटका ।
पूजुं श्री जिनेश्वर देव ॥ आजे मंगल० ॥
आजे मोतीना चोक पुरावीया ।
पामी पूरण प्रभुनो प्रसाद ॥ आजे मंगल० ॥
मारा पिताये नीतिवसन आपीयां ।
जाणे सुखनो वरस्यो वरशाद ॥ आजे० ॥
मारी माताये खोरे बेसाडीने ।
आप्यो ज्ञान तणो भंडार ॥ आजे मंगल० ॥
बेहनी सासरीये सुखथी सिधावजो ।
नहीं तर अहीं जेवुं थासे ॥ आजे मंगल० ॥

बहु करवुं जे करवुं नहीं जरी ।
सउने बोल बुंदई सन्मान ॥ आजे मंगल० ॥
जाणी नीति विवेकनी रीत ।
तो तुं पामीश जग मांहे मान ॥ आजे० ॥
तारा पतिने प्रभुपद आपजे ।
तेथी सुखी थईश तत्काल ॥ आजे मंगल० ॥
नहीं वचन पतिनुं उथापजे ।
नारी देव शीयलनी करशे सेव ॥ आजे० ॥
तारा तातनुं नाम दीपावजे ।
जेथी रीझे दया पतिदेव ॥ आजे मंगल० ॥

२५--बालिका गीत ।

प्यारी सईयोर सखीओ वेली आवशो, आजे करीये उत्तम स्नेह ।
मारो सोना सरीखो सूरज उगीयो ॥ टेक ॥
बेहनी वेर विरोध सर्वे छोडीने ।
पुन्य प्राप्त करवाने काज ॥ मारो सोना० ॥
बेहनी प्रथम ते दृढ समकीत छे ।
तेने पालो शुद्ध सुभाग्य ॥ मारो सोना० ॥
बेहनी आठ मूलगुण ग्रहण करवा ।
सागो पंच उदंबर मकार ॥ मारो सोना० ॥

बेहनी क्रोध मान माया लोभ छोडीने ।

तृष्णा थोडी राखो मनसाथ ॥ मारो सोना० ॥

बेहनी जैन मंदिर नित्य नेमथी ।

दर्शन करवाने काज ॥ मारो सोना० ॥

बेहनी दर्शन करीने शुं शुं सीखिये ।

भलो विनय पर उपकार ॥ मारो सोना० ॥

बेहनी नीची नजरे नित्य चालीये ।

ढांकी पोतानुं अंग उपांग ॥ मारो सोना० ॥

बेहनी विद्या गुरुथी विवेक वधारीये ।

तेथी विद्यानो थाये उद्योत ॥ मारो सोना० ॥

बेहनी सासरे रेहवुं नित्य नीमथी ।

सासु नणदल जेठाणी साथ ॥ मारो सोना० ॥

बेहनी गुरुनी शिखामण पालीने ।

बेहनी कुळनी वधारी लाज ॥ मारो सोना० ॥





"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस,
खपाटिया चकला–सूरतमें
मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया।